सृष्टि-चक्रः-

पुरातन काल से मनुष्य ने अपने जन्म से पूर्व और मृत्यु के पश्चात् की कहानी को जानने का भरसक प्रयास किया है और कई तरह से इसे वर्णित किया है। वास्तव में परमपिता+परमात्मा के अनुसार यह मनुष्य सृष्टि-चक्र आत्माओं और प्रकृति का एक अद्भुत नाटक है, जिसकी हर 5000 वर्ष के बाद पुनरावृत्ति होती है। 5000 वर्ष के इस सृष्टि-चक्र में प्रत्येक आत्मा इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आकर ये शरीर रूपी वस्त्र धारण कर भिन्न-2 भूमिका अदा करती है।

इस सृष्टि रूपी नाटक को कालक्रमानुसार चार युगों में बाँटा गया है - **सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग**। प्रत्येक युग की आयु 1250 वर्ष की होती है। सतयुग और त्रेतायुग को मिलाकर **'स्वर्ग'** कहा जाता है तथा द्वापरयुग और कलियुग को मिलाकर **'नर्क'** कहा जाता है। स्वर्ग और नर्क इसी सृष्टि पर होते हैं, न कि आकाश या पाताल में। अद्वैतवादी देवताओं के सतयुग और त्रेतायुग में इस सृष्टि पर एक धर्म , एक राज्य, एक भाषा आदि होने तथा देह-अभिमान न होने के कारण सदा सुख, शांति और पवित्रता होती है। सतयुग व त्रेतायुग में **आदि सनातन देवी-देवता धर्म** था, जिसमें हर आत्मा दिव्यगुण सम्पन्न होने के कारण **देवी-देवता** कहलाती थी। सतयुग का **पहला महाराजकुमार श्री कृष्ण और पहली महाराजकुमारी श्री राधे** थी, जो बड़े होकर **श्री लक्ष्मी व श्री नारायण** के रूप में राज्य करते हैं, जिनकी 8 गद्दियाँ चलती हैं। उसके बाद त्रेतायुग में **श्री सीता व श्री राम** का राज्य होता है, जिनकी 12 गद्दियाँ चलती हैं; किंतु स्वर्ग में कृष्ण के साथ कंस या राम के साथ रावण नहीं होता। द्वापरयुग से देवता धर्म की रजोगुणी अवस्था प्रारम्भ हो जाती है। देव आत्माएँ देह -अभिमान में आकर विकारी एवं दुःखी बन जाती हैं और इसीलिए भगवान को पुकारना आरम्भ करती हैं। देव -आत्माएँ (जो अब हिन्दू कहलाती हैं) शिवलिंग तथा अन्य देवताओं की पूजा प्रारम्भ कर देती हैं। चूँकि वे उसी समय अचानक सम्पूर्ण पतित तथा दुःखी नहीं बनती हैं, इसलिए परमपिता+परमात्मा स्वयं उन्हें पावन बनाने नहीं आते हैं; अपितु उनके स्थान पर कुछ शक्तिशाली आत्माएँ आती हैं, जो यथाशक्ति सृष्टि पर शांति स्थापन करती हैं; किंतु पूरी तरह सफल नहीं होतीं। सर्वप्रथम (अर्थात् आज से 2500 वर्ष पूर्व) **'इब्राहीम'** की आत्मा आकर **'इस्लाम धर्म'** की स्थापना करती है। इसके 250 वर्ष के पश्चात् **'बुद्ध'** की आत्मा **'बौद्ध धर्म'** की स्थापना करती है। इसके 250 वर्ष पश्चात् (अर्थात् आज से 2000 वर्ष पहले) **'ईसा मसीह'** की आत्मा आकर **'ईसाई धर्म'** की स्थापना करती है।

उपर्युक्त तीन द्वैतवादी धर्म द्वापरयुग में ही स्थापन होते हैं; किंतु इन चार प्रमुख धर्मों से ही कलियुग में अनेकानेक धर्म, मठ, पंथ आदि का प्रचार-प्रसार हो जाता है; जैसे **संन्यास धर्म, मुस्लिम धर्म, सिक्ख धर्म, आर्य समाज, नास्तिकवाद** आदि। कलियुग आते-2 देवता धर्म (जो हिन्दू धर्म कहलाता है) की तमोप्रधान अवस्था हो जाती है। इसी प्रकार हर धर्म की प्रत्येक आत्मा भी सृष्टि पर जन्म से लेकर कलियुग अन्त तक सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजो और तमोप्रधान अवस्था से गुजरती है। जब कलियुग अंत में इस सृष्टि की सभी आत्माएँ धर्म भ्रष्ट और कर्म भ्रष्ट बन जाती हैं तब सभी धर्मपिताओं के भी पिता , स्वयं परमपिता+परमात्मा शिव का दिव्य अवतरण होता है, जिसका वर्णन 'त्रिमूर्ति' के पाठ में किया गया है। उनके अवतरण काल, सतयुग-आदि और कलियुग-अंत को **'संगमयुग'** कहा जाता है, जब परमपिता शिव हम आत्माओं को उत्तम -से-उत्तम देवी-देवता बनाने के लिए ज्ञान और राजयोग की शिक्षा प्रदान करते हैं तथा मुक्ति और जीवन्मुक्ति का ईश्वरीय जन्मसिद्ध

अधिकार देते हैं। बाकी युगों के संक्रमण काल को भी संगम कह सकते हैं ; किन्तु वहाँ आत्माओं की गिरती कला होती है और सिर्फ़ कलियुग तथा सतयुग के संगम पर ही आत्माओं की चढ़ती कला होती है , इसलिए इसे **'पुरुषोत्तम संगमयुग'** कहा जाता है। भारत के प्राचीन धर्म शास्त्रों में चार युगों का तो वर्णन है ; किन्तु पुरुषोत्तम संगमयुग का उल्लेख नहीं है। यदि सतयुग , त्रेता, द्वापर तथा कलियुग की तुलना स्वर्ण, रजत, ताम्र तथा लौह से करें तो संगमयुग हीरे समान श्रेष्ठ युग है; क्योंकि इस युग में स्वयं परमपिता+परमात्मा सृष्टि पर अवतरित होकर आत्माओं को कौड़ी से हीरा बनाते हैं। इसके लिए वे सर्वप्रथम प्रजापिता ब्रह्मा में प्रवेश होकर आदि पिता एवं आदि माता को प्रत्यक्ष करते हैं (जैसा कि पहले के अध्यायों में बताया गया है) और उनके मुख से ज्ञान सुनाकर ब्रह्माकुमार-कुमारियों को प्रजापिता ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण भी बनाया जाता है , जो ज्ञान और राजयोग के अभ्यास से 'ब्राह्मण सो देवता' बनते हैं।

इस संगमयुग की एक विशेषता यह है कि इसमें पूरे 5000 वर्ष की शूटिंग या रिहर्सल होती है। यह शूटिंग या रिहर्सल का कार्य सन् 1936-37 से सुप्रीम सोल शिव के अवतरण के पश्चात् लगभग 100 वर्ष चलता है। जिस प्रकार 5000 वर्ष के ड्रामा में आत्माएँ सतोप्रधान, सतोसामान्य, रजो और तमोप्रधान अवस्था से गुजरती हैं, उसी प्रकार परमपिता सन् 1936-37 से जिस अलौकिक ब्राह्मण परिवार की रचना करते हैं और जिनकी अवस्था को सतोप्रधान बनाते हैं, वही लगभग 80 वर्षों में सतोप्रधान से सतोसामान्य, सतोसामान्य से रजोप्रधान और रजो से तमोप्रधान अवस्था तक पहुँच जाता है। इस प्रकार संगमयुग के मध्यांत तक अर्थात् सन् 2000 से 2003-04 तक परमपिता+परमात्मा शिव द्वारा रचे गए ब्राह्मण परिवार में ज्ञानयुक्त संकल्पों के आधार पर चतुर्युगी की शूटिंग होती है। इस शूटिंग में डायरैक्ट परमपिता +परमात्मा के प्रति और उनके ज्ञान के प्रति नं.वार सभी ब्राह्मणों को संशय आने लगता है। देह-अभिमान बढ़ जाने के कारण दिव्य गुणों की धारणा के स्थान पर अवगुणों का ऐसा राज्य स्थापित हो जाता है कि निराकार शिव के साकार रथ को ही पतित , विकारी और भ्रष्टाचारी सिद्ध करने का प्रयास किया जाने लगता है; परन्तु अंत में पुनः परमपिता+परमात्मा के दिव्य ज्ञान और राजयोग के द्वारा परमपिता शिव की तथा जगदम्बा-जगतपिता की प्रत्यक्षता होती है तथा सम्पूर्ण ब्राह्मणों की दुनिया एक सूत्र में बँध जाती है।

इस प्रकार संगमयुग में ही सतयुग, त्रेता, द्वापर तथा कलियुग की नींव पड़ती है। जनसंख्या की दृष्टि से भी पूरे 5000 वर्ष के नाटक में आत्माओं के पृथ्वी पर अवतरण अथवा ज्ञान में आने की नींव भी संगमयुग में ही पड़ती है। संगम पर ईश्वर का संदेश जिस-2 आत्मा को जितना शीघ्र प्राप्त होता है, वह 5000 वर्ष के ड्रामा में भी परमधाम से उतना ही शीघ्र आकर पहले-2 सुख, फिर अपने-2 कर्मानुसार दुःख भोगती है। जैसे सन् 1990 में त्रेतायुगी शूटिंग ख़त्म होने तक लगभग 10 करोड़ देव-आत्माओं को संदेश मिल चुका था। अर्थात् उतनी आत्माएँ 5000 वर्ष के ड्रामा में त्रेतायुग के अंत तक पृथ्वी पर जन्म ले लेती हैं।

जनसाधारण यह समझते हैं कि इस ब्रह्माकुमारी आश्रम का ज्ञान शास्त्रों से मेल नहीं खाता ; किन्तु ऐसा नहीं है। केवल मुरलियों के गुह्यार्थ को समझने की आवश्यकता है। जैसे शास्त्रों में सतयुग की आयु , त्रेतायुग से अधिक और त्रेता की आयु, द्वापरयुग से अधिक बताई जाती है। इस संदर्भ में वैसे तो 5000 वर्ष के विशाल ड्रामा में हर युग की आयु समान अर्थात् 1250 वर्ष है; किन्तु संगमयुग में इन युगों की शूटिंग के दौरान हर युग की शूटिंग की अवधि अलग-2 होती है। जैसे संगमयुग में वास्तविक सतयुगी शूटिंग में 16 वर्ष की अवधि, त्रेता की शूटिंग में 12 वर्ष की अवधि से अधिक है और त्रेता की शूटिंग की अवधि , 8 वर्ष की द्वापरयुगी शूटिंग की अवधि से अधिक है। इसी प्रकार गीता जैसे शास्त्रों में हर युग में भगवान के अवतरित होने की जो बात कही गई है, वह वास्तव में संगमयुग में ही चार युगों की शूटिंग के अंत में उनके प्रत्यक्षता रूपी जन्म की यादगार है। 5000 वर्ष के ड्रामा में तो शिव भगवान हर युग में अवतार नहीं लेते ; किन्तु संगमयुग में हर युग की शूटिंग के दौरान वे प्रत्यक्ष और गुप्त होते रहते हैं। इस प्रकार शास्त्रों की हर बात परमपिता शिव के ब्रह्मा द्वारा संगमयुग पर

उच्चारे गए महावाक्यों से मेल ज़रूर रखती है।

उपर्युक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि मनुष्य-सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है और किस प्रकार चारों युगों की नींव संगमयुग में ही पड़ती है।